एम.एच.डी.-14
हिन्दी उपन्यास-1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. - 14
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-14/टीएमए/2019-2020
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10×4= 40

(क). तुमने जो कुछ कहा, वही मैं स्वप्न में देख रहा था और तुम्हें सेवाधर्म का उपदेष कर रहा था। सुमन, तुम मुझे भलीभांति जानती हो, तुमने मेरे हाथों बहुत दुःख उठाए हैं, बहुत कष्ट सहे हैं। तुम जानती हो, मैं कितनी नीच प्रकृति का अधम जीव हूँ, लेकिन अपनी उन नीचताओं का स्मरण करता हूँ, तो मेरा हृदय व्याकुल हो जाता है। तुम आदर के योग्य थीं, मैंने तुम्हारा निरादर किया। यह हमारी दुरवस्था का, हमारे दुःखों का मूल कारण है। ईष्वर वह दिन कब लायेगा कि हमारी जाति में स्त्रियों का आदर होगा। स्त्री मैले–कुचैले, फटे–पुराने वस्त्र पहनकर आभूषणविहीन होकर, आधे पेट सूखी रोटी खाकर, झोपड़े में रहकर, मेहनत–मजदूरी कर, सब कष्टों को सहते हुए आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकती हैं केवल घर में उसका आदर होना चाहिए, उससे प्रेम होना चाहिए।

(ख) उसकी भौतिक दृष्टि उस प्रेम के ऐन्द्रिक स्वरूप से आगे न बढ़ सकती थी और उसका हृदय इन प्रेम सुख कल्पनाओं से तृप्त न होता था। वह उन भावों को अनुभव करना चाहती थी। विरह और वियोग, ताप और व्यथा, मान और मनावन, रास और विहार, आमोद और प्रमोद का प्रत्यक्ष स्वरूप देखना चाहती थी। पहले पति–प्रेम उसका सर्वस्व था। नदी अपने पेटे में ही हलकोरें लिया करती थी। अब उसे उस प्रेम का स्वरूप कुछ मिटा हुआ, फीका, विकृत मालूम होता था। नदी उमड़ गई थी। पति–भक्ति का वह बाँध जो कुलमर्यादा और आत्मगौरव पर आरोपित था, इस प्रेम–भक्ति की बाढ़ से टूट गया।

(ग) मैं तुम्हें जितना सरल हृदय समझती थी, तुम उससे कहीं बढ़कर कूटनीतिज्ञ हो। मैं तुम्हारा आषय समझती हूँ और इसलिए कहती हूँ, जैसी तुम्हारी इच्छा। पर षायद तुम्हें मालूम नहीं कि युवती का हृदय बालक के समान होता है। उसे जिस बात के लिए मना करो, उसी तरफ लपकेगा। अगर तुम आत्मप्रषंसा करते, अपने कृत्यों की अप्रत्यक्ष रूप से डींग मारते, तो षायद मुझे तुमसे अरुचि हो जाती। अपनी त्रुटियों और दोषों का प्रदर्षन करके तुमने मुझे और भी वषीभूत कर लिया। तुम मुझसे डरते हो, इसलिए तुम्हारे सम्मुख न आऊँगी, पर रहूँगी तुम्हारे ही साथ। जहाँ–जहाँ तुम जाओगे, मैं परछाईं की भाँति तुम्हारे साथ रहूँगी।

(घ) अगर मेरी जबान में इतनी ताकत होती कि सारे देष में उसकी आवाज पहुँचती, तो मैं सब स्त्रियों से कहती–बहनों, किसी सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना और अगर करना तो जब तक अपना घर अलग न बना लो, चैन की नींद मत सोना। यह मत समझो कि तुम्हारे पति के पीछे उस घर में तुम्हारा मान के साथ पालन होगा। अगर तुम्हारे पुरुष ने कोई तरका नहीं छोड़ा, तो तुम अकेली रहो चाहे परिवार में, एक ही बात है। तुम अपमान और मजदूरी से नहीं बच सकतीं।

2. 'प्रेमचंद' साहित्य के क्षेत्र में बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार थे।' इस कथन की समीक्षा कीजिए। 10

3. 'सेवा सदन' के औपन्यासिक षिल्प पर प्रकाष डालिए। 10

4. 'प्रेमाश्रम' में तत्कालीन समाज की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है ? विष्लेषण कीजिए। 10

5. 'रंगभूमि' उपन्यास के आधार पर सूरदास और गांधी जी के विचारों की समानताएँ और असमानताएँ स्पष्ट कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5×4= 20
   (क) प्रेमचंद की नारी दृष्टि
   (ख) 'प्रेमाश्रम' और कृषि समस्या
   (ग) रमानाथ का चरित्र
   (घ) सेवा सदन में अभिव्यक्त समस्याएँ

एम.एच.डी.-15
हिन्दी उपन्यास-2
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. - 15
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-15/टीएमए/2019–2020
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :** 10×4= 40

(क). कांता के जालन्धर लौट जाने के प्रायः मास भर बाद कनक को लगा, पंडित जी कुछ नये ढंग से या नयी–नयी बातें सोचने लगे थे। कुछ ऐसी बातें जो उनके लिए तीस–चालीस वर्ष पूर्व सोचना अधिक स्वाभाविक होता। उचित–अनुचित के लिए निर्णय में परम्परा और बहुमत की अपेक्षा अपने विवेक पर भरोसा करने के साहस की आवष्यकता। परिस्थिति के अनुसार जीवन की पूर्णता के लिए जो अनुकूल हो, वही उचित है।

(ख) षाह जी सिर हिलाते रहे और हँसते रहे–'भगत जी, तुम्हारे हाथों खुल रही हो किस्मत किसी की, तो बताओ मैं क्या रोकूँ! तुम्हारा दिल दरिया है पर हिसाब–हिसों का कौन पुगाएगा! जट्ट मुजारों के औकड़ वेले कौन टपाएगा।'

'हम तो निमित्त हैं, करणहार–कर्त्ता तो ऊपरवाला है !'

'काषीराम, बंदों के सिरों पर एक नहीं दो की ज़ोरावरी है। एक मालकी ऊपरवाले रब्ब की और दूसरी हकूमत नीचेवाली सरकार की!'

'ऊपरवाला ही बड़ा है। उसकी नज़र रहे सीधी तो दुनिया का जर्रा–जर्रा पुख्ता। जो बढ़ जाए जुल्मत तो घड़ी–पल में बड़ी–से–बड़ी सल्तनते नेस्तनाबूद।'

ग) हाँ टेकनीक पर ज़्यादा जोर वही देता है जो कहीं–न–कहीं अपरिपक्व होता है, जो अभ्यास कर रहा है, जिसे उचित माध्यम नहीं मिल पाया। लेकिन फिर भी टेकनीक पर ध्यान देना बहुत स्वस्थ प्रवृत्ति है बषर्ते वह अनुपात से अधिक न हो जाये। जहाँ तक मेरा सवाल है मुझे तो कहानी कहने के दृष्टिकोण से फ्लाबेयर और मोपासा बहुत अच्छे लगते हैं क्योंकि उनमें पाठक को अपने जादू में बाँध लेने की ताकत है, वैसे उनके बाद चेख़व ने एक बार किसी महिला से कहा था, 'कहानी कहना कठिन बात नहीं है। आप कोई चीज़ मेरे सामने रख दें, यह शीषे का गिलास, यह ऐष–ट्रे और कहें कि इस पर कहानी कहूँ। थोड़ी देर में मेरी कल्पना जागृत हो जायेगी और उससे सम्बद्ध कितने लोगों के जीवन मुझे याद आ जायेंगे और वह चीज़ कहानी का सुन्दर विषय बन जायेगी।'

(घ) पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गाँव के जमींदारों में लम्बरदार के रूप में करते थे। अब वे कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर और कॉलेज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में ज़िम्मेदारी के इन कामों को निभानेवाला कोई आदमी ही न था और वहाँ जितने नवयुवक थे, वे पूरे देष के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे, इसलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को सँभालना पड़ा था।

2. 'झूठा सच' में अभिव्यक्त पुनर्वास के संघर्ष और प्रक्रिया का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए। 10

3. 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास के प्रमुख चरित्रों का परिचय दीजिए। 10

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के वस्तु संगठन की विषेषताएँ बताइए। 10

5. 'राग दरबारी' के वैद्य जी की चारित्रिक विषेषताएँ बताते हुए स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने इनके माध्यम से अपने किस उद्देश्य की पूर्ति की है। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5×4= 20

(क) माणिक मुल्ला का चरित्र
(ख) 'जिंदगीनामा' में परिवेष चित्रण
(ग) 'झूठा सच' की अंतर्वस्तु
(घ) 'राग दरबारी' में चित्रित पुलिस–प्रषासन

एम.एच.डी.-13 : उपन्यासः स्वरूप और विकास
(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-13 / टीएमए / 2019-2020
कुल अंक : 100

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. उपन्यास में यथार्थ की अभिव्यक्ति के विविध रूपों को व्याख्यायित कीजिए। 15

2. हिंदी उपन्यास में किसान–चेतना और स्त्री–चेतना के क्रमिक विकास की चर्चा कीजिए। 15

3. उपन्यास की भाषागत विषिष्टता का सोदाहरण विष्लेषण कीजिए। 15

4. प्रेमचंद के उपन्यासों में निहित राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की अभिव्यक्ति के स्वरूप पर प्रकाष डालिए। 15

5. स्वातंत्रता से पूर्व भारतीय उपन्यासों में स्त्री उत्थान से संबंधित प्रष्नों की केन्द्रीयता के कारणों पर प्रकाष डालिए। 15

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5×5= 25
   (क) भारतीय उपन्यास में जातीय चेतना
   (ख) 19वीं सदी के अंग्रेजी उपन्यास
   (ग) आँचलिक उपन्यास
   (घ) उपन्यास और जीवनी
   (ङ) मनोवैज्ञानिक उपन्यास